हियावथा और भयानक बाढ़

अनाम

हियावथा और भयानक बाढ़

अनाम

हियावथा एक छोटा इंडियन था.

वो बहुत बहादुर था.

उसे जंगल से बहुत प्यार था.

जंगल के सभी जानवर उसके दोस्त थे.

उसके सबसे अच्छे दोस्त ऊदबिलाव थे.

हियावथा को ऊदबिलावों द्वारा बांध बनाते हुए देखना बहुत पसंद था.

कभी-कभी ऊदबिलाव बांध के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करते थे.

अक्सर वे अपने मजबूत

दांतों से पेड़ों को काटते थे.

हियावथा को अपने दोस्तों के साथ खेलना बहुत पसंद था.

लेकिन वह बड़ा होना भी चाहता था.

फिर वह बड़े इंडियन शिकारियों के साथ शिकार कर सकता था!

एक रात सभी इंडियंस, कैंप में आग के आसपास बैठे थे. बहादुर इंडियन शिकारी अगले दिन भालुओं के शिकार की योजना बना रहे थे.

"मैं भी आपके साथ जाना चाहता हूँ," हियावथा ने उनसे कहा. बहादुर इंडियंस मुस्कुराए.

अगली सुबह-सुबह बहादुर इंडियंस
शिकार पर जाने के लिए तैयार थे.

"मैं भी तैयार हूँ," हियावथा ने कहा.

"क्या तुम भी भालू के शिकार पर चलोगे?"
एक शिकारी ने पूछा.

"देखो, तुम अभी भी बहुत छोटे हो, हियावथा.
तुम कैंप में ही रहो और खेलो."

फिर बहादुर इंडियंस
शिकार पर निकल पड़े.
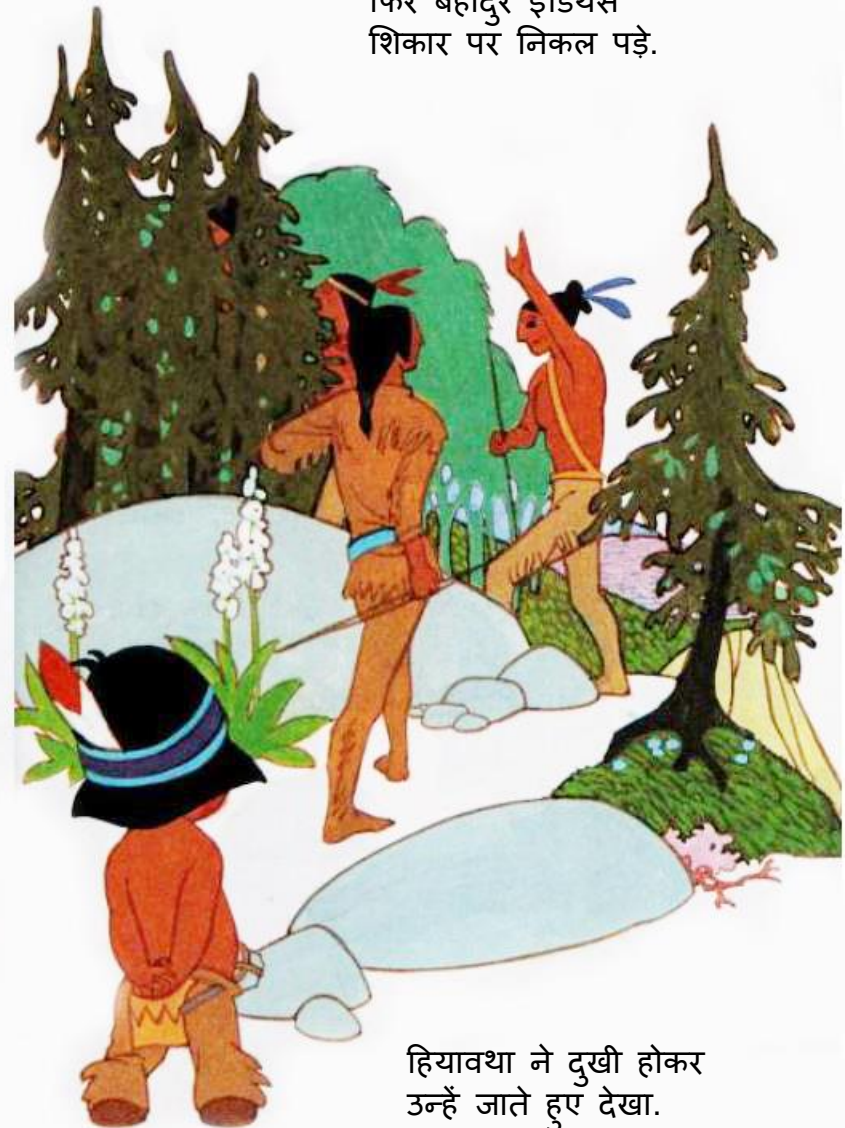
हियावथा ने दुखी होकर
उन्हें जाते हुए देखा.

"मेरे साथ बेर इकट्ठे करो," उसकी बहन सनफ्लावर ने कहा.
"वो काम छोटे बच्चों के लिए है," हियावथा ने कहा.
"मैं एक बहादुर शिकारी बनना चाहता हूँ."
और फिर वो अकेले ही वहां से चल पड़ा.

हियावथा एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया.

ऊपर से वह बहादुर इंडियन
शिकारियों को देख सकता था.

वे बड़ी नदी की ओर जाने वाले
रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे.

बहादुर इंडियन शिकारी, ऊदबिलाव के बाँध के पास से आगे बढ़ रहे थे.

फिर उन्होंने एक पेड़ तने से बने पुल को लांघकर बड़ी नदी पार की.

वो पुल उन्होंने एक गिरे हुए पेड़ से बनाया था.
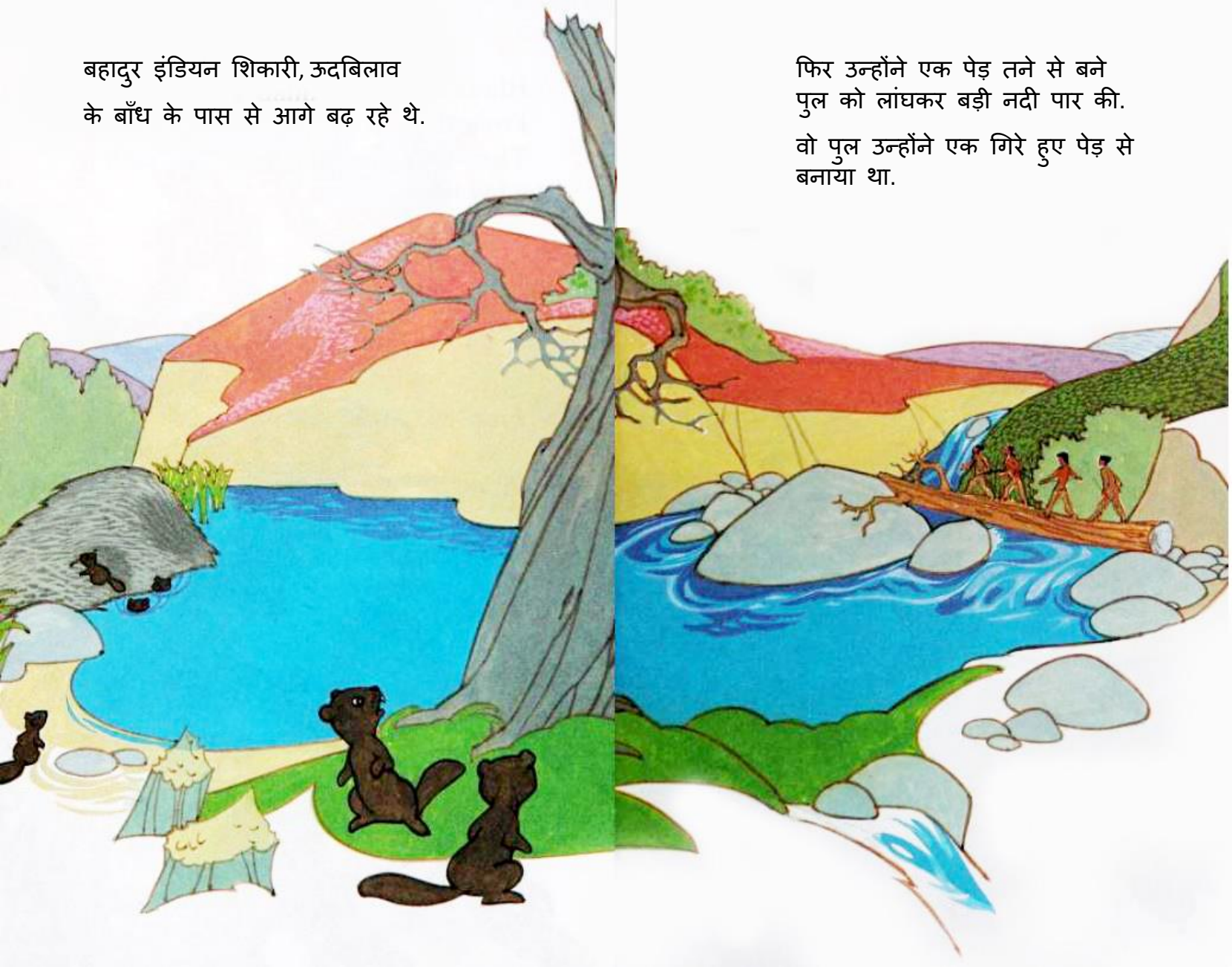
बहादुर शिकारी नदी के दूसरी ओर पहुँचे.

फिर वे एक चट्टान के पीछे गायब हो गए.

"काश मैं उनके साथ जा पाता,"
हियावथा ने खुद से कहा.

अचानक बारिश शुरू हो गई.

हियावथा पेड़ से
नीचे उतरा.

वह कैंप की ओर
वापस चल पड़ा.

बारिश में हियावथा जल्दी से घर भागा.

उसके जंगल के दोस्त भी, बारिश से
छिपने के लिए भागे.

बिजली चमक रही थी.

बादलों की गड़गड़ाहट बहुत तेज थी.

हियावथा जब अपने टीपी (तम्बू) पर
पहुंचा तो वह पूरी तरह भीग चुका था.

सनफ्लॉवर और उसकी माँ उसका
इंतज़ार कर रहे थे.

"अपने गीले कपड़े उतारो,"
हियावथा की माँ ने कहा.

माँ ने उसके कपड़े सूखने के
लिए टांग दिए.

हियावथा ने एक कटोरी बढ़िया गर्म सूप पिया.

"मुझे आश्चर्य है कि बहादुर इंडियन शिकारी
अब कहाँ होंगे," उसने कहा.

"बहादुर शिकारी उनके कपड़े भीगने की
परवाह नहीं करते," हियावथा ने कहा.

"काश वे घर पर होते," उसकी माँ ने कहा.

"शिकार के लिए बारिश का मौसम खराब
होता है."

बाढ़ से ऊदबिलावों का बांध भी बह गया.

बाढ़ से सोते हुए ऊदबिलाव परिवार अपने बिस्तरों समेत बह गए!

पूरी रात इंडियंस के कैंप में बारिश होती रही.

तेज़ हवा से पेड़ झुक गए.

नदी में बाढ़ आ गई.
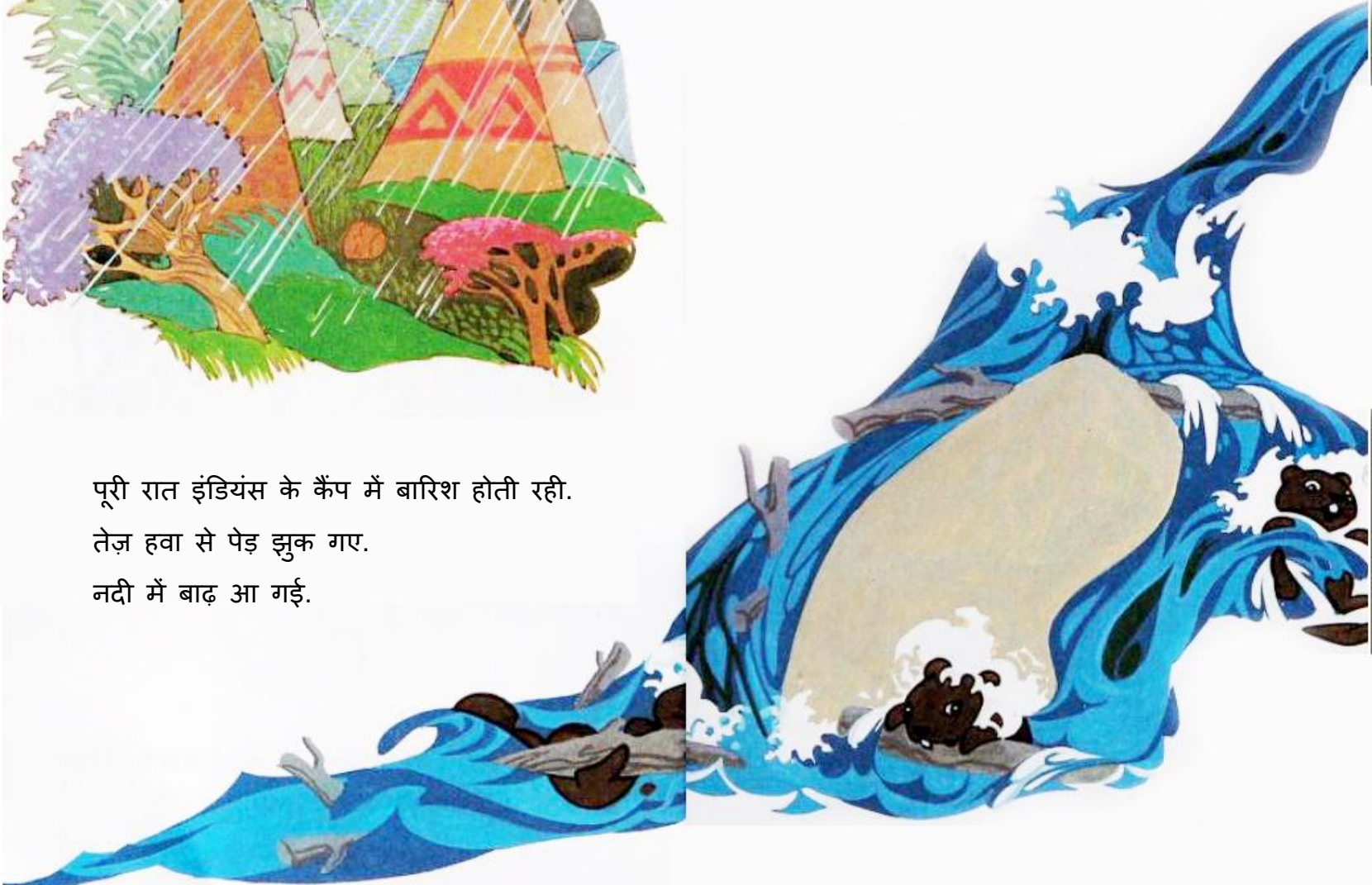
सुबह बारिश रुक गई.

तब ऊदबिलावों ने एक अद्भुत दृश्य देखा!
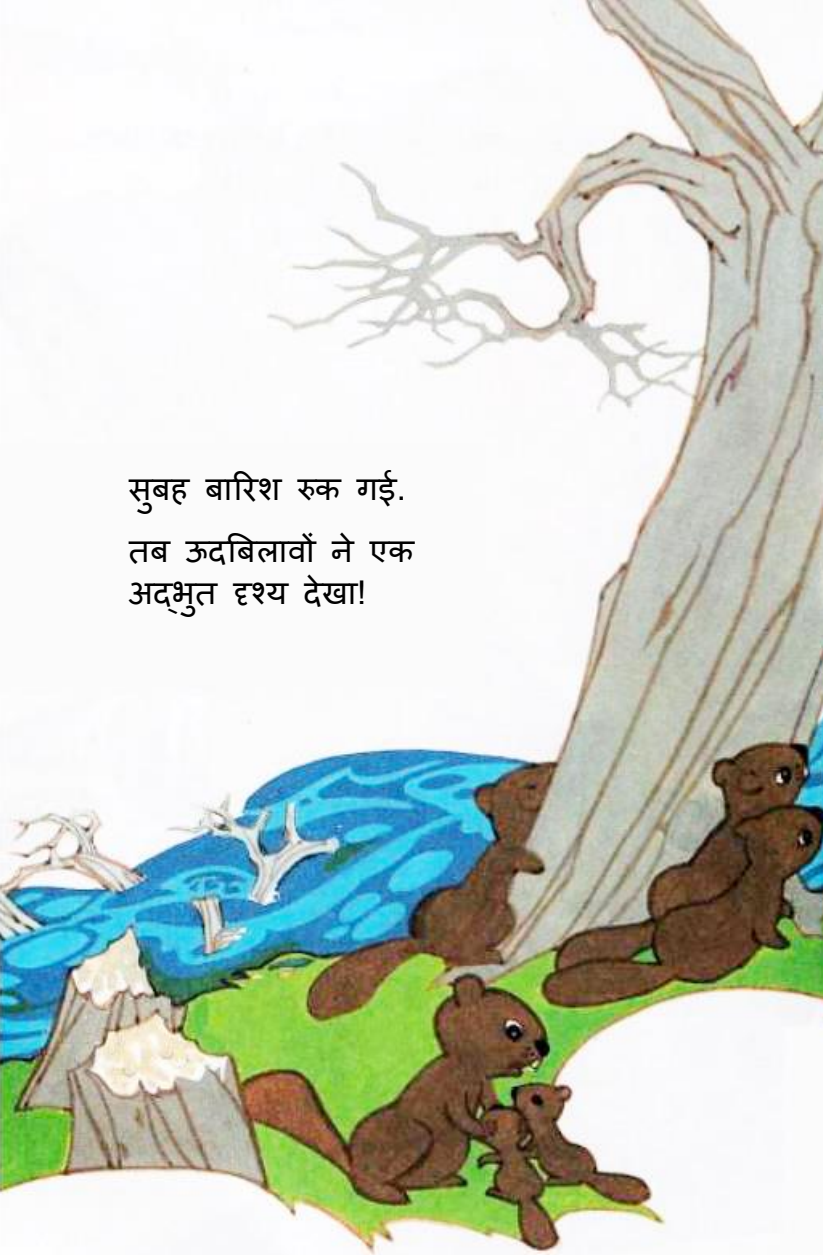
बहादुर इंडियन शिकारी नदी के बीच में एक बड़ी चट्टान पर फंस गए थे.

बाढ़ पेड़ के तने वाले पुल को बहा ले गई थी.

अब इंडियन शिकारी नदी को पार नहीं कर सकते थे.

वे अपने घर वापिस नहीं जा सकते थे!

कैंप में मौजूद इंडियंस
नींद से उठ रहे थे.

"देखो, अब बारिश रुक गई है. हमारे
शिकारी जल्द ही घर वापिस आएंगे,"
हियावथा की माँ ने कहा.

लेकिन शिकारी वापिस
नहीं आए. कई घंटे बीत
गए. उससे महिलाएँ
बहुत चिंतित हुईं.

"इंडियन शिकारियों को कुछ हो गया है,"
हियावथा ने अपने खरगोश मित्रों से कहा.

"वे अभी तक शिकार से घर नहीं लौटे हैं."

हियावथा नदी की ओर भागा.

खरगोश भी उसके साथ उछल-कूद
करते हुए गए.

जब हियावथा नदी पर पहुँचा, तो उसने देखा कि इंडियन शिकारी फँसे हुए थे.

"मुझे उनकी मदद करनी चाहिए!" हियावथा ने कहा. "लेकिन कैसे?"

फिर इंडियन शिकारियों ने हियावथा को देखा.

"मदद करो, हमारी मदद करो!" उन्होंने पुकारा.

"मैं क्या कर सकता हूँ?" हियावथा ने वापस पुकारा.

"इस रस्सी को पकड़ो!" एक शिकारी ने पुकारा.

उन्होंने रस्सी को हियावथा की ओर फेंका.

लेकिन रस्सी बहुत छोटी थी.
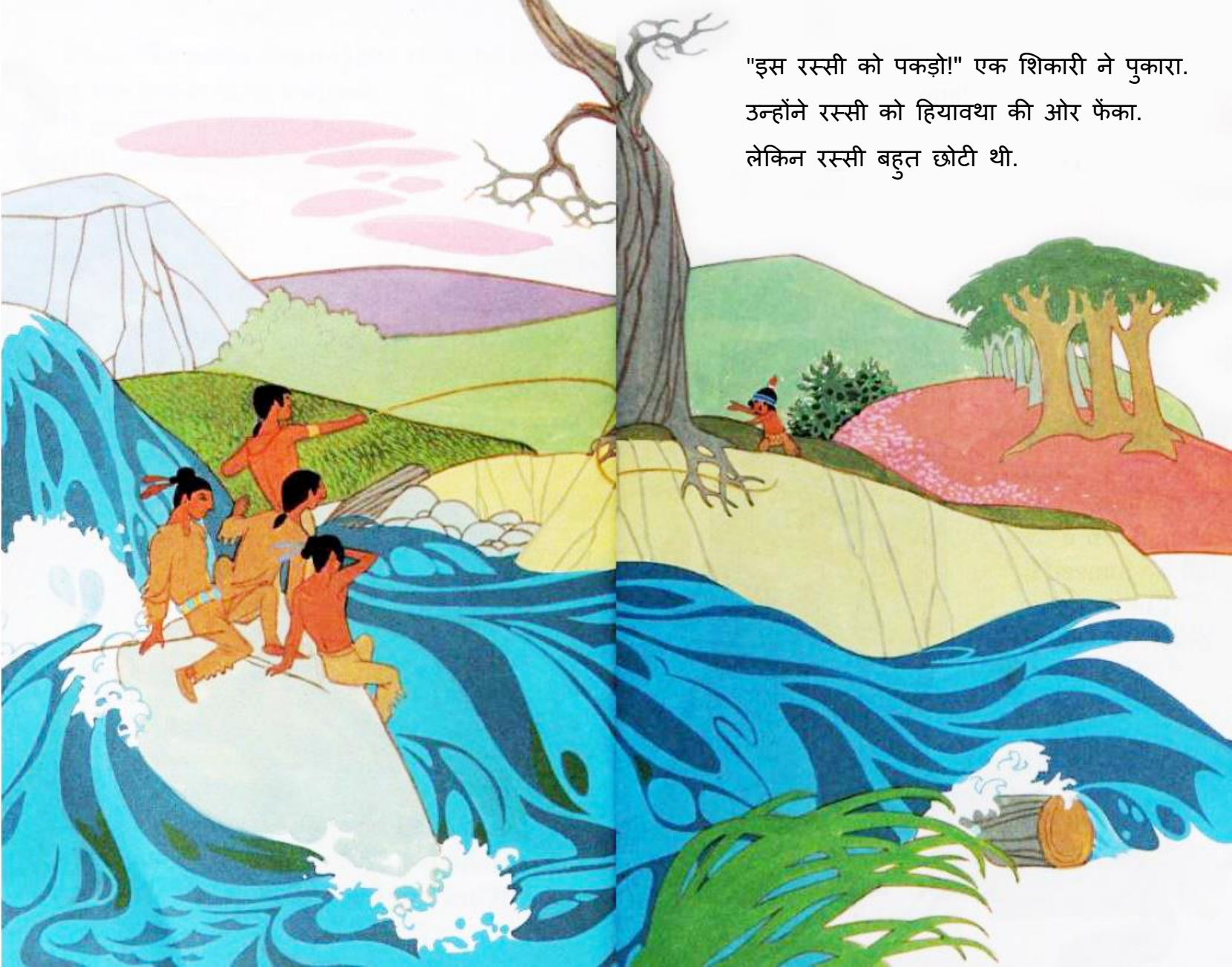
"हमें एक नया पुल चाहिए!"
एक अन्य इंडियन शिकारी ने कहा.

"क्या तुम उस पेड़ को काट सकते हो?"

हियावथा ने उस बड़े पेड़ को देखा.

वह अकेले भला उस बड़े पेड़ को कैसे काट सकता था?

"मुझे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना होगा!" उसने सोचा.

चिप! चिप!
हियावथा ने अपनी कुल्हाड़ी को पेड़ के तने पर मारा.
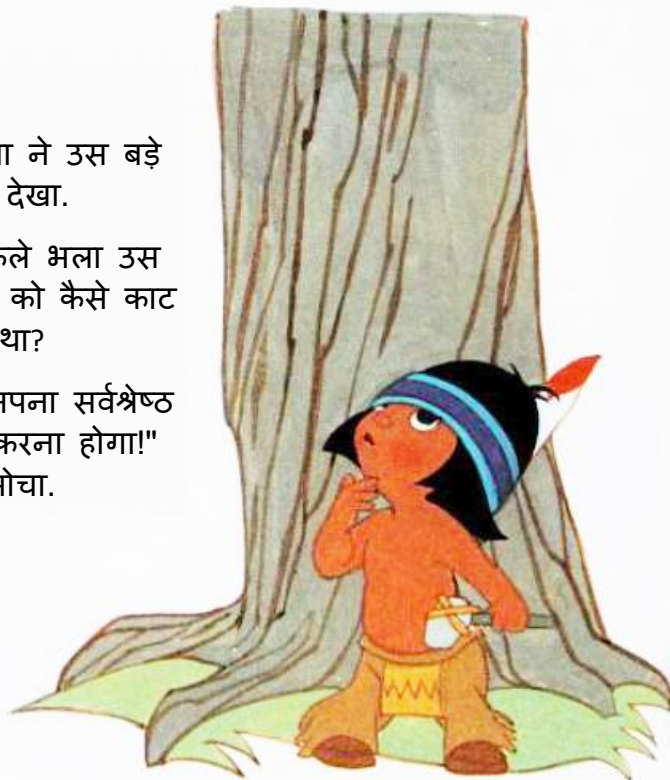
"यह काम बड़ा कठिन है," हियावथा ने कहा.

तभी ऊदबिलाव उसे देखने के लिए आए.

"इस कुल्हाड़ी से बिल्कुल काम नहीं बनेगा," हियावथा ने ऊदबिलावों से कहा.

ऊदबिलाव उसकी मदद करने में जुट गए.

"चबाओ, चबाओ!" वे चिल्लाए.

फिर ऊदबिलावों ने अपने मजबूत दांतों से पेड़ को कुतरना शुरू किया.

जल्द ही ऊंचा पेड़ हिलने लगा.

"सावधान!" हियावथा ने कहा.

हियावथा ने पेड़ को धक्का दिया ताकि वह नदी के उस पार गिरे.

ऊदबिलावों ने भी धक्का दिया.
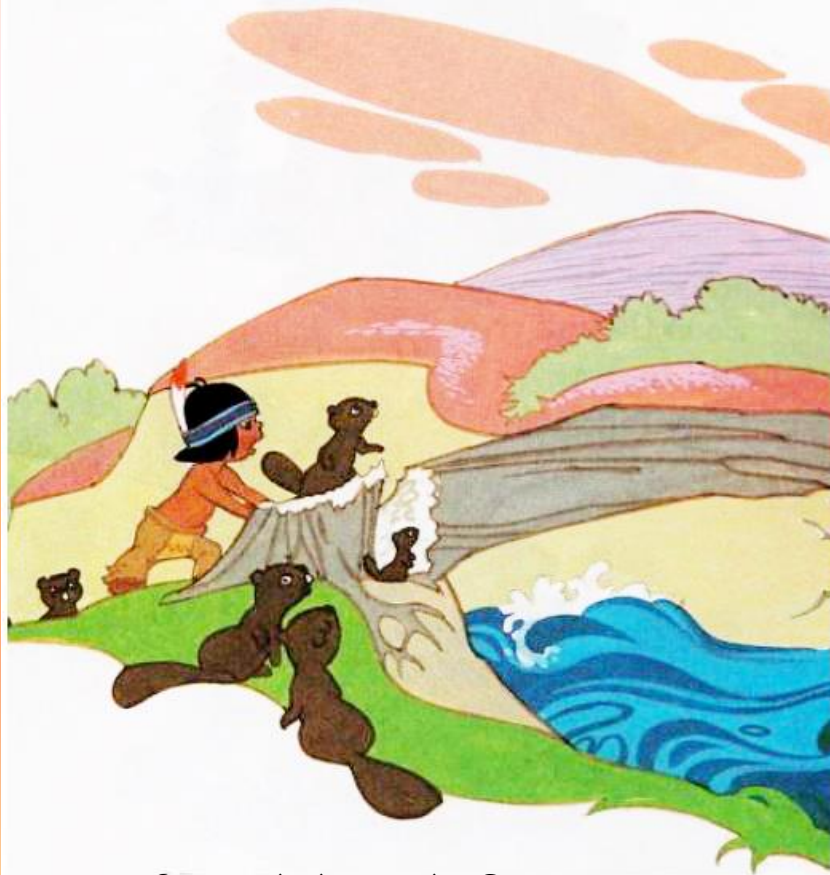
फिर धमाके के साथ पेड़ गिर पड़ा!

ऊंचा पेड़ चट्टान तक पहुँच गया.

उससे इंडियन शिकारियों के लिए
एक लंबा, मजबूत पुल बन गया.

खुश इंडियन शिकारियों ने जोर से जयकार की.

"हियावथा के लिए हुर्रे!" वे चिल्लाए.

इंडियन शिकारी नए पुल को पार

करके कैंप में वापस पहुंचे.
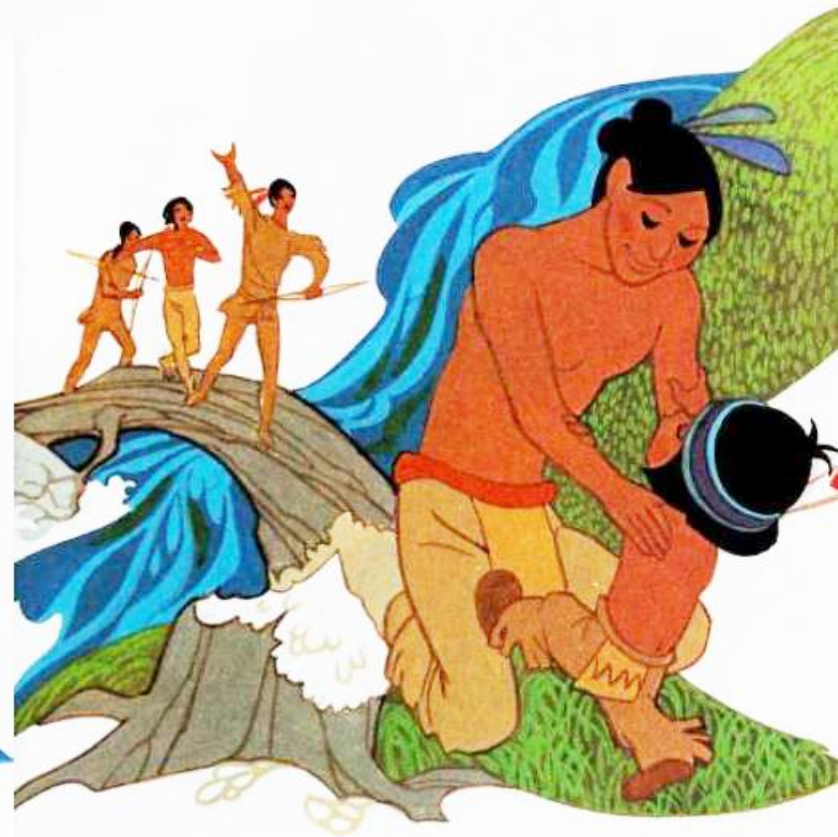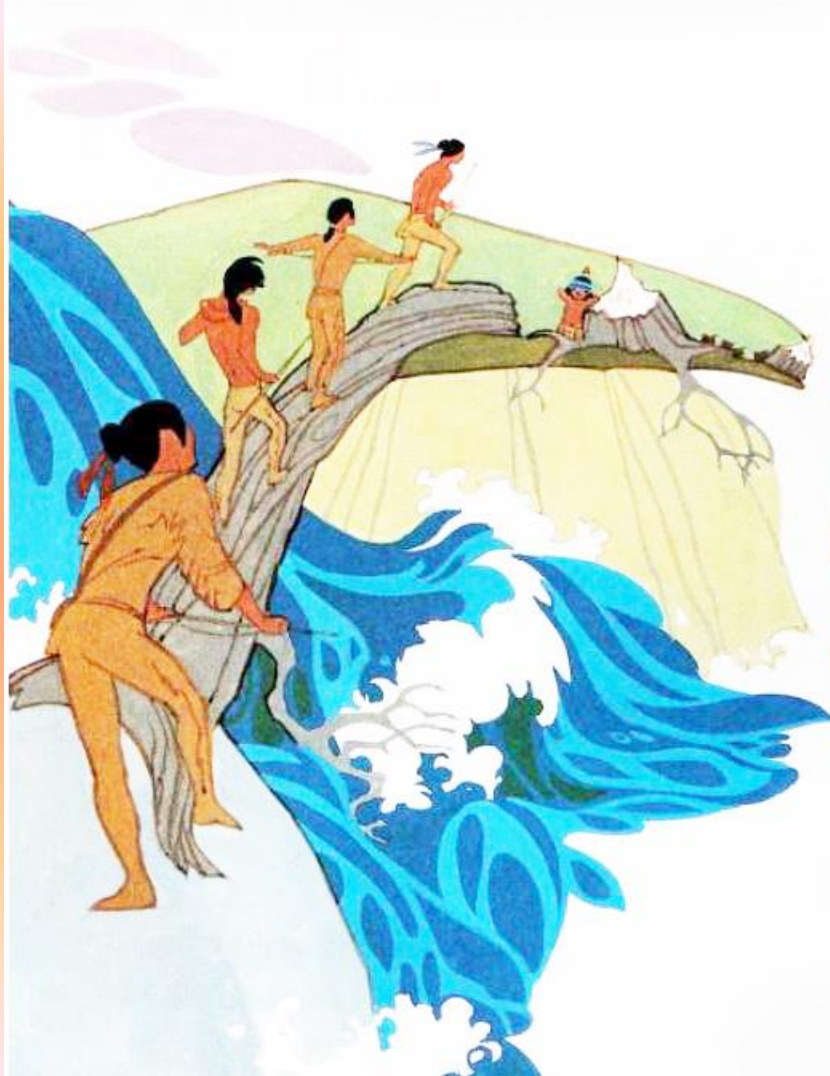
उस दिन हियावथा कैंप का हीरो था!
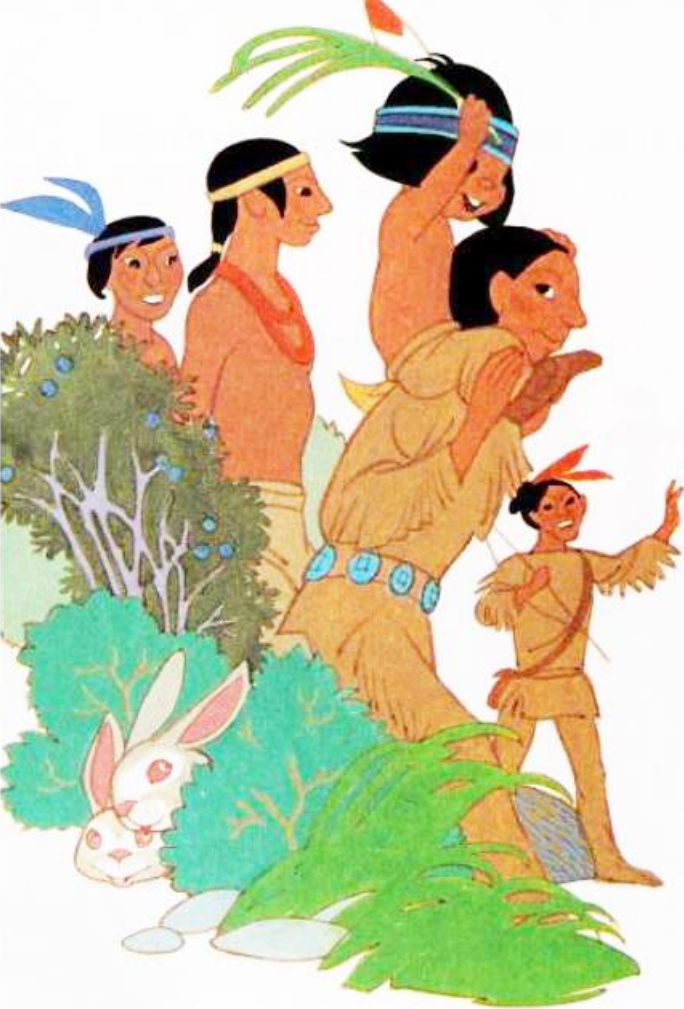
हियावथा एक इंडियन शिकारी के कंधों पर सवार होकर कैंप में वापस आया.

बड़े सरदार ने हियावथा को युद्ध की टोपी दी. "आज तुमने इंडियन शिकारियों की जान बचाई,"

बड़े सरदार ने हियावथा से कहा.

"मुझे तुम पर बहुत गर्व है."

"ऊदबिलावों ने भी उसमें मदद की," हियावथा ने कहा.

अगले दिन हियावथा और सनफ्लावर नदी पर वापस गए.

उन्होंने ऊदबिलाव परिवारों की फिर से बांध बनाने में मदद की.

सूर्यास्त तक काम खत्म हो गया.

हियावथा और सनफ्लावर ने अपने दोस्तों से अलविदा कहा.

और ऊदबिलावों ने भी हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया.

अब हर कोई सुरक्षित और खुश था!